प्रबंधन :

1. बीज को उपचारित कर बोएँ ।
2. खड़ी फसल पर रोग के लक्षण दिखाई देने पर रिडोमिल एमजेड दवा की 2 कि. ग्राम. 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से फसल पर छिड़काव करें ।

3. तना सड़न :

यह रोग दो करणों से होता है। बैक्टीरिया के कारण होने वाले रोग में ऊपर के दूसरे या तीसरे अन्तरगांठ मुलायम पड़कर सड़ जाते है और पौधा टूटकर गिर जाता है। जबकि फफूँद से होने वाले तना सड़न में जमीन के समीपवाली अन्तरगाँठ मुलायम पड़ जाता है जिससे तना कमजोर होकर टूट जाता है ।

प्रबंधन :

1. ग्रीष्मकाल में खेत की जुताई अवश्य करें ।
2. खेत को खरपतवार से मुक्त रखें ।
3. बीज को उपचारित कर बोआई करें ।
4. खेत में पानी का निकास सही रखें ।
5. खड़ी फसल में रोग के लक्षण दिखाई पड़ने पर ताम्रजनित फफूँदनाशी का 3.0 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर पौधों के आधार एवं तना को भिंगोए ।

संपादक :
डा० रत्नेश कुमार झा
कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, मांझी, सारण

संकलन :
डा० सुरेन्द्र प्रसाद
श्रीमती अर्चना कुमारी

मक्का की फसल में समेकित कीट/व्याधि प्रबंधन

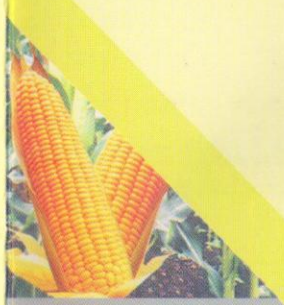

कृषि विज्ञान केन्द्र, माँझी, सारण
राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, पूसा
समस्तीपुर-848 125 (बिहार)

मक्का की फसल में समेकित कीट/व्याधि प्रबंधन

मक्का की फसल में समेकित कीट/व्याधि प्रबंधन : मक्का बिहार की एक महत्वपूर्ण फसल है। मक्के की फसल को विभिन्न प्रकार के कीड़े एव रोग फसल की विभिन्न अवस्था में क्षति पहुँचाते है, जिससे उपज प्रभावित हाती है।

(क) प्रमुख कीट एव समेकित प्रबंधन :

1. **कजरा, दीमक एवं सफेद गरार :** ये मिट्टी जनित कीड़े हैं, जो मक्का की जड़ों पर आक्रमण करते है। दीमक का आक्रमण ऊँची जमीन पर अधिक होता है जो मिट्टी की सतह पर देखा जा सकता है। सफेद गरार भूमि के अन्दर रहकर पौधे की जड़ो को खाते हैं, जबकि कजरा का पिल्लू मिट्टी की सतह पर पौधों का काट देता है।

प्रबंधन :

1. बोआई के पूर्व क्लोरपायरीफॉस या फोरेट 10 जी. का दस किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से मिट्टी में मिला दें ।
2. खड़ी फसल में आक्रमण होने पर क्लोरपायरीफॉस 20 प्रतिशत तरल दवा का 2.5 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से मिट्टी पर छिड़काव करें अथवा सिंचाई के पानी में मिला दें ।

छड़ छेदक कीट :

खड़ी फसल का सबसे प्रमुख शत्रु कीट है। पत्ते की निचली सतह पर मादा कीट अंडे देती है। पिल्लू अंडे से बाहर निकलकर तना में प्रवेश कर मुलायम भाग को खाते हैं, जिससे बीच का गम्भा सूख जाता है।

प्रबंधन :

1. प्रकाश फंदा या फेरोमोन फंदा के प्रयोग से कीट की संख्या में कमी होती है।
2. 2 से 3 पत्ती के पौधा रहने पर इण्डोसल्फान 35 ई॰ सी॰ का 1 लीटर या क्वीनलफॉस 25 प्रतिशत ई॰ सी॰ का 1 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें। पौधा अगर 6-8 पत्ती के (घुटने भर के) हो जाए तो कार्बोफ्यूरान 3 जी का 5.0 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से इस प्रकार डालें कि गाभा में 3-4 दाना चले जायें ।

भुआ पिल्लू :

इसे हेयरी कैटर पिलर कहा जाता है। पिल्लू पौधे के हरे भागों को खाते है। अत्याधिक आक्रमण के फलस्वरूप पौधे पत्तीविहीन हो जाते हैं। पिल्लू नारंगी रंग के रोएँदार एवं सिर और पीछे का भाग काला होता है।

प्रबंधन :

1. रोकथाम के लिए अंडो को एकत्र कर नष्ट कर दें ।
2. प्रकश फंदा के प्रयोग द्वारा आसानी से नष्ट किया जा सकता है।
3. प्रारंभिक अवस्था में अंडो से निकलने के बाद डिंम झुण्ड में एक जगह रहते है। अत: पत्तियाँ को तोड़कर उसे जला दें ।
4. रसायनिक दवा में डायक्लोरोमॉस का 300 मि॰ ली॰ प्रति हेक्टयर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें ।

प्रमुख रोग एवं प्रबंधन :

मक्का फसल को आक्रन्त करने वाले प्रमुख रोग एवं समेकित प्रबंधन :

1. पत्र झुलसा :

यह दो प्रकार के फफूँद से होता है। टर्सिकम लीफ ब्लाइट में नाव के आकार के भूर हरे धब्बे बनते है जबकि मेडिसलीफ ब्लाइट में अण्डाकार पीले भूर रंग के धब्बे बनते हैं।

प्रबंधन :

1. बोआई के पूर्व बीज को उपचारित कर लें ।
2. खेत को खरपतवार मुक्त रखें क्योंकि खरपतवार ही रोग का प्राथमिक स्त्रोत है।
3. खड़ी फसल में रोग दिखाई देने पर मैनकोजेब 75 प्रतिशत धु॰ चू॰ 2 कि॰ ग्राम॰ प्रति हेक्टेयर की दर से पानी में घोल बनाकर 10 दिन के अंतराल पर 2-3 छिड़काव करें ।

2. डाउनी मिल्डीऊ :

इस रोग में बोआई के 20-25 दिनों के बाद नये पत्तियाँ ऊजले पीले रंग की हो जाती है। अधिक संक्रमण की स्थिति में पत्तियाँ भूरी होकर सूखना प्रारंभ कर देती है। पौधे की बढ़ोत्तरी रूक जाती है।